

४. एक प्रश्न : चार उत्तर

प्रस्तावना

* हररोज़ हमारे मनमें अनेक प्रश्न उठते हैं। हम उन प्रश्नों का क्या करते हैं ? या तो हम उनके उत्तर खुद से ढूँढने का प्रयास करते हैं या किसी को पूछकर उनके उत्तर ढूँढने का प्रयास करते हैं ताकि हमें प्रश्नों के प्रति उन लोगों की विचारधारा पता चलती है।

मनमें प्रश्नों का उठना बहुत अच्छी बात है। हमें हमारे मनमें उठे हुए प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास हमेशा करना चाहिए। इससे हमारा बौद्धिक विकास होता है। प्रस्तुत पाठ भी इस विषय से ही जुड़ा है। जिनके लेखक हैं श्री प्रकाश जी। श्री प्रकाशजी हिंदी के जानेमाने साहित्यकार हैं। अपने लेखन से उन्होंने समाज में जो समस्याएँ हैं, उन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने चार मित्रों से एक ही प्रश्न पूछा है और उनसे जो अलग अलग जवाब मिले हैं उनको यहाँ पर दर्शाया है। चारों मित्रों के जवाब अलग अलग होने के बावजूद सभी चार मित्र सही हैं। तो चलिए हम गद्य पाठ 4 शुरू करते हैं जिसका नाम है 'एक प्रश्न - चार उत्तर'

स्वाध्याय

१. निम्न लिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

१. प्रत्येक नागरिक को पूर्णतः लगन एवं निष्ठा के साथ कार्य करना चाहिए ।

(अ) ईमानदारी

(ब) बेईमानी

(क) जल्दबाज़ी

(ड) धीरे – धीरे

२. वृद्ध ईसाई पादरी ने कहा –

(अ) तुम बड़े आलसी हो ।

(ब) तुम भिखारी हो ।

(क) तुम ईमानदार बनो ।

(ड) तुम लोग अपने काम में गर्व नहीं लेते ।

३. भगवान की मूर्ति की स्थापना करने के बाद –

(अ) उनके कहे अनुसार चलना चाहिए ।

(ब) मूर्ति की पूजा करनी चाहिए ।

(क) प्रचार – प्रसार करना चाहिए ।

(ड) पुजारीजी के आदेश का पालन करना चाहिए ।

२. निम्न लिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. लेखक को किस बात की खब्त है ?

उत्तर : लेखक को खब्त ईस बात की है कि देश में बड़े – बड़े नेता और आंदोलन होने के बावजूद हमारा देश उन्नति क्यों नहीं कर रहा ?

२. कुटुंब व्यवस्था किस प्रकार नष्ट हो गई ?

उत्तर : गुणी पिता द्वारा अपनी विधा या ज्ञानि पुत्र को न देकर कुटुंब व्यवस्था नष्ट हो गई ।

३. हम किसकी जय – जयकार करते हैं ?

उत्तर : हमारे देश के बड़े – बड़े नेताओं की मूर्ति स्थापित करके हम उनकी जय – जयकार करते हैं ।

४. सच्चा देशभक्त कौन है ?

उत्तर : जो अपना कर्तव्य ठीक प्रकार से करता है वही सच्चा देशभक्त है ।

३. निम्न लिखित प्रश्नों के दो- तीन वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. हमारे देश में किस प्रकार जागृति आ सकती है ?

उत्तर : हमारे देश के लोग अपने काम में गर्व लेने लगेंगे । काम के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझेंगे । परिश्रम का महत्व पहचानने लगेंगे । और अपनी विधा दूसरों को देने की उदारता दिखाएंगे तभी हमारे देश में जागृति आ सकती है ।

२. मनुष्य समाज को संगठित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर : हमारा कार्यक्षेत्र छोटा हो या बड़ा हमें अपना कार्य ठीक प्रकार से करना चाहिए जिससे हमारा व्यक्तिगत जीवन संगठित होगा । और व्यक्तिगत जीवन के संगठित होते ही मनुष्य समाज अपने आप संगठित हो जाएगा ।

३. 'तुम लोगों में उदारता नहीं है' - कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर : 'तुम लोगों में उदारता नहीं है' - कथन का आशय है कि भारत के लोग अपनी विधा या ज्ञान दूसरों को सिखाने की उदारता नहीं रखते । वह खुद ही आगे रहना चाहते हैं । जिसके कारण कितने ही वैज्ञानिक आविष्कार और औषधियां लुप्त हो गई हैं । इस उदारता के अभाव के कारण समाज और देश का कितना ही नुकसान हो रहा है ।

४. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

१. ईसाई पादरी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया ?

उत्तर : लेखक ने वृद्ध ईसाई पादरी मित्र से अपने देश के बारे में प्रश्न पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि हमारे देश के लोग अपने काम में गर्व नहीं लेते। विस्तार से उन्होंने कहा कि यहाँ पर किसी को नौकरी चाहिए तो अतिशयोक्ति पूर्ण शब्दों में दरखास्त देता है। अपने मालिक की शुभकामना की प्रतिज्ञा करते हैं। परंतु नौकरी मिलते ही अपनी जीविका के साधन को खराब करने के लिए साथियों से मिलकर षड्यंत्र रचते हैं और मालिक को परेशान करते हैं। जबकी अन्य देशों में लोग साधारण – शब्दों में दरखास्त देते हैं। और जब नौकरी मिल जाए तो उसे पूरे गर्व के साथ और निष्ठा से करते हैं।

२. वृद्ध सरकारी कर्मचारी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर किन – किन उदाहरणों से समझाए ?

उत्तर : लेखक ने वृद्ध सरकारी कर्मचारी मित्र से देश की उन्नति के बारे में प्रश्न पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि भारत के लोग अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते। जिस कार्य की ज़िम्मेदारी हमने ली हो उसे पूरा करना चाहिए – यह गुण हम भूल गये हैं। किसी को किसी पर विश्वास ही नहीं रहा। खाने की दावत में महेमान समय से आयेगे की नहीं यह मेजबान को विश्वास नहीं होता। और महेमान को यह विश्वास नहीं कि समय पर जाने से खाना मिल पाएगा की नहीं। गृहस्थ को यह विश्वास नहीं की धोबी, दर्जी समय पर कपड़े दे जायेंगे। और धोबी, दर्जी को यह विश्वास नहीं कि उसे समय पर पैसा मिल जायेगा। रेलगाड़ी में चढ़नेवालों को यह विश्वास नहीं कि पहले से बैठे यात्री उन्हें स्थान देंगे और पहले से बैठे यात्री को यह विश्वास नहीं कि नया यात्री व्यर्थ शोर न मचायेगा। किसी को यह विश्वास नहीं की केले, नारंगी का छिलका, सुई, पिन आदि इस तरह से न छोड़ेगा, जिसे दूसरों को कष्ट न पहुँचे, इन सब उदाहरणों से सरकारी कर्मचारी ने लेखक को समझाया कि यहाँ के लोग केवल अपनी तात्कालिक सुविधा देखते हैं। दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों का अनुभव नहीं करते।

३. एक बड़ी वृद्धा स्त्री ने प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया ?

उत्तर : लेखक ने एक बड़ी वृद्धा स्त्री को देश की उन्नति के बारे में प्रश्न पूछा तो उस वृद्धा स्त्री ने उसका उत्तर देते हुए कहा कि भारत देश के लोगों में उदारता नहीं है। उसने विस्तार से समझाया कि भारत में लोग दूसरों को आगे नहीं बढ़ाते। स्वयं को ही आगे रखना चाहते हैं। बड़े – बूढ़ों की यह सोच के कारण गुणी नवयुवकों को अपनी योग्यता दिखाने का मौका नहीं मिलता बड़े – बड़े गुणी अपनी विधा

साथ लेकर ही मर गए । ईस कारण कितने ही वैज्ञानिक आविष्कार, औषधिया आदि लुप्त हो गई । पिता अपने पुत्र को घर का काम नहीं बतलाता । जिससे कितने ही कुटुंब नष्ट हो गए । वैसे तो दूसरों के प्रति उदारता न दिखाकर लोग खुद को ही नाश कर रहे हैं । ईस प्रकार वृद्धा स्त्री ने लेखक को समझाया कि उदारता के अभाव के कारण देश की उन्नति नहीं हो रही ।

४. देश को कैसे नागरिकों की आवश्यकता है और क्यों ?

उत्तर : जो व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी को समझकर अपने काम में गर्व करते हैं , और अपना काम दूसरों को सिखाने की उदारता रखता है ऐसे परिश्रमी नागरिक की हमें आवश्यकता है । क्योंकि देश का नागरिक ज़िम्मेदार विवेकशील, परिश्रमी, गुणी, निष्ठावान और उदार होगा तो ही देश की उन्नति होगी ।